मुकेश सहनी
मंत्री, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार
पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

विश्व रेबिज दिवस

28 सितम्बर, 2021

विश्व रेबिज दिवस 28 सितम्बर को प्रतिवर्ष रेबिज बीमारी और इसकी रोकथाम के बारे में सामुदायिक जागरूकता बढ़ाने एवं रेबिज के खिलाफ होने वाली लड़ाई में विश्व को एकजुट करने का सकारात्मक प्रयास के लिए एक अवसर है। विश्व रेबिज दिवस समुदाय, व्यक्तियों, गैर सरकारी संगठनों और सरकारों के लिए रेबिज रोकथाम के लिए एकजुट होने का वैश्विक दिन है।

रेबिज क्या है

- रेबिज रोग मनुष्यों तथा अन्य गर्म खून वाले जानवरों में होने वाला तीव्र विषाणुजनित (वायरल) संक्रमण है।
- यह बीमारी अधिकांशतः पागल (रेबिज ग्रसित) कुत्तों या अन्य जानवरों के काटने, कटी त्वचा पर चाटने, घाव तथा खरोंच आदि से शरीर में विषाणु के प्रवेश करने के कारण होता है। इस बीमारी के लक्षण प्रकट होने पर मौत निश्चित है।
- यह एक घातक बीमारी है, जो मानव मस्तिष्क को प्रभावित करती है तथा प्रतिवर्ष होने वाली हजारों मौतों का कारण भी बनती है।
- यह बीमारी ग्रसित मनुष्य एवं पशुओं के चेतना में अस्थिरता, आसमान्य व्यवहार, उत्तेजना, उद्विग्नता आदि पैदा करती है। यह एक जूनोटिक बीमारी है जो अधिकांशतः पागल (रेबिज ग्रसित) कुत्तो के काटने से होती है।

पशुओं में लक्षण

पारालिटिक या शान्त अवस्था में :

- जानवर अधिकतर एकांत एवं अन्धकार में रहना पसन्द करता है और सुस्त एवं शान्त रहता है।
- जबड़े के मांसपेशियों के लकवाग्रस्त होने के कारण नीचला जबड़ा लटक जाता है तथा जानवर खाने–पीने में असमर्थ हो जाता है।
- मुँह से लगातार लार तार की तरह लटकता रहता है। गले का फैरिंग्स एवं लैरिंग्स लकवाग्रस्त हो जाता है।
- जानवर कभी गिरता है, कभी उठता है और काल्पनिक चीजों को पकड़ने का प्रयास करता है।
- पिछले दोनों पैर लकवाग्रस्त हो जाते हैं। लकवाग्रस्त होने के कारण जानवर घसीटकर चलता है एवं लक्षण प्रकट होने के एक से सात दिनों में मौत हो जाती है।

उग्र (फ्यूरियस) अवस्था में :

- बात नहीं मानना, रास्ते में आने वाले मनुष्यों, पशु पक्षियों या निर्जीव वस्तुओं को काटना या काटने के लिए दौड़ना।
- निरूद्देश्य ईधर–उधर दौड़ना, भागना तथा काटने की प्रवृति बढ़ जाना।
- भूख लगने पर सामान्य खाना न खाकर अखाद्य पदार्थों जैसे घास, पत्ता, ईंट, पत्थर, कीचड़, गोबर आदि को उठानें, खाने एवं काटने का प्रयास करना।
- अन्त में लड़खराना, भौंकने में असमर्थता एवं मौत।

उपचार

- रेबिज लाईलाज बीमारी है। प्रायोगिक स्तर पर चिकित्सा का प्रयास जारी है।

कुत्तों में प्री–एक्सपोजर टीकाकरण

- पहला टीकाकरण – तीन माह की उम्र में।
- बुस्टर टीकाकरण – प्रथम टीकाकरण के तीन सप्ताह बाद।
- तत्पश्चात् वर्ष में एक बार टीकाकरण।

रेबीज को रोकने के लिए कुछ महत्वपूर्ण चरणों का पालन किया जाना चाहिए

- रेबिज के बारे में विशेष रुप से बच्चों के बीच जागरूकता प्रसारित की जानी चाहिए।
- बेसहारा जानवरों के अनावश्यक संपर्क से बचना चाहिए।
- घरेलु कुत्तों के साथ–साथ बेसहारा कुत्तों का भी टीकाकरण अवश्य किया जाना चाहिए।
- कुछ व्यक्तियों जैसे कुत्ता पकड़ने वालों, रेबीज रोगियों के सीधे संपर्क में आने वाले मेडिकल और पैरामेडिकल कर्मचारियों को रेबीज से संक्रमित होने का खतरा अधिक होता है, इसलिए इस वर्ग में आने वाले सभी व्यक्तियों को स्वयं को प्रतिरक्षित करवाना चाहिए।
- जानवर के काटने पर एंटी रेबीज वैक्सीन के लिए तुरंत चिकित्सक से परामर्श करें।

प्राथमिक उपचार

- तत्काल काटे हुए जगह को नल के बहते पानी के नीचे 10–15 मिनट लगातार साबुन लगाकर या कास्टिक सोडा से धोना आवश्यक है। तत्पश्चात् 70 प्रतिशत इथाईल अल्कोहल या टिंक्चर आयोडिन काटने के स्थान पर लगाना चाहिए। घाव को बन्द नहीं करें। चारों तरफ से तुरन्त टांका न दें।

टीकाकरण

- यद्यपि रेबिज घातक रोग है, फिर भी इस बीमारी को रोकने में टीके सौ प्रतिशत कारगर होते हैं। जितनी जल्दी सम्भव हो सके, उतनी जल्दी अपने पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें। प्रोफिलैक्सिस हेतु एंटी–रेबिज का टीकाकरण तीन इंजेक्शन के रूप में, एक काटने के दिन, दूसरा टीका तीसरे दिन, और तीसरा टीका सातवें दिन करवाना चाहिए। अगर कुत्ते की मृत्यु 10 दिनों के अंदर हो जाती है तो 14 वें दिन एवं 28 वें दिन भी टीकाकरण करवाना चाहिए। चिकित्सीय परामर्शानुसार टेटनस की सूई अवश्य लगवाना चाहिए।

संकल्प

अपने मस्तिष्क तक में रेबिज रोग की प्राण घातक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, हम सभी को ''विश्व रेबिज दिवस'' के अवसर पर रेबीज के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में शामिल होना चाहिए तथा इस अतिसंवेदनशील रोग के उन्मूलन में अपना योगदान भी देना चाहिए।

पशुपालन निदेशालय, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार, पटना द्वारा जनहित में प्रचारित